

श्रीमद्भागवत नवम स्कन्ध अध्याय 17: धन्वन्तरि

29 September 2026



पाठ से पहले एक निवेदन

श्रीमद्भागवत महापुराण के ये अध्यायवार सार गीता प्रेस भागवत को मुख्य आधार मानकर तैयार किए गए हैं। ये भागवत के अध्ययन में सहायक हैं, मूल ग्रंथ का स्थान नहीं ले सकते।

अध्ययन का मुख्य और अनुशंसित मार्ग गीता प्रेस की भागवत पुस्तक से सीधा पाठ है। यात्रा में, घर से दूर, या जब पुस्तक पास न हो, तब निरंतर अध्ययन, पुनरावृत्ति और समझ के लिए इन सारों का सहारा लिया जा सकता है।



काशी के वंश में जन्मे, भगवान् धन्वन्तरि — भगवान् वासुदेव के आंशिक अवतार एवं आयुर्वेद के प्रवर्तक — अमृत का पात्र धारण किए प्रकट होते हैं, वह दिव्य वैद्य जिनका मात्र स्मरण रोग को दूर कर देता है।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

श्रीमद्भागवत विङ्गडम् में आपका स्वागत है — श्रीमद्भागवत महापुराण की पवित्र कथाओं एवं शिक्षाओं की एक श्रद्धापूर्ण यात्रा। नवम स्कन्ध का यह सत्रहवाँ अध्याय पुरूरवा के पुत्र आयु से उतरे चन्द्रवंश की अनेक धाराओं का अनुसरण करता है — उन्हीं में दिव्य वैद्य के रूप में भगवान् धन्वन्तरि का अवतार, और राजा रजि एवं उनके पुत्रों की विपरीत नियतियाँ।

अध्याय-पारेचय

- ग्रन्थ: श्रीमद्भागवत महापुराण
- स्कन्ध: 9 (नवम स्कन्ध)
- अध्याय: 17 (सप्तदश अध्याय)
- अध्याय शीर्षक: पुरुरवा के पुत्रों के वंश
- मुख्य वक्ता: श्री शुकदेव गोस्वामी, राजा परीक्षित को कथा सुनाते हुए — सम्पूर्ण कथा सूत गोस्वामी द्वारा नैमिषारण्य में शौनक ऋषि एवं ऋषि-समुदाय को सुनाई गई
- मुख्य श्रोता: राजा परीक्षित
- मुख्य स्थल: आयु के पुत्रों से उतरे चन्द्रवंश की धाराएँ — क्षत्रवृद्ध एवं काशी के वंश, तथा राभ (रजि) एवं अनेना के वंश
- केन्द्रीय विषय: आयु के पुत्रों की शाखाएँ, भगवान् धन्वन्तरि का अवतार, अलर्क का दीर्घ शासन, और राजा रजि एवं उनके पुत्रों की कथा
- मुख्य श्लोक-परास: नवम स्कन्ध, अध्याय 17, श्लोक 1-17
- मुख्य संस्करण: गीता प्रेस श्रीमद्भागवत महापुराण

आयु के पुत्र

शुकदेव ने चन्द्रवंश आगे बढ़ाया। पुरुरवा के पुत्र आयु के पाँच पुत्र थे: नहुष, क्षत्रवृद्ध, रजि, राभ, और अनेना। क्षत्रवृद्ध के वंश में, उनके पुत्र सुहोत्र के तीन पुत्र थे — काश्य, कुश, और गृत्समद; और गृत्समद से शुनक हुए, जिनके पुत्र ऋषि शौनक थे, ऋग्वेद के पाठकों में श्रेष्ठ।

श्रीबादरायणिरुवाच

यः पुरुरवसः पुत्र आयुस्तस्याभवन् सुताः ।

नहुषः क्षत्रवृद्धश्च रजि राभश्च वीर्यवान् ॥ १ ॥

अनेना इति राजेन्द्र शृणु क्षत्रवृद्धोऽन्वयम् ।

क्षत्रवृद्धसुतस्यासन् सुहोत्रस्यात्मजास्त्रयः ॥ २ ॥

काश्यः कुशो गृत्समद इति गृत्समदादभूत् ।

शुनकः शौनको यस्य बह्वचप्रवरो मुनिः ॥ ३ ॥

*śrī-bādarāyaṇir uvāca yaḥ purūravasah putra āyus tasyābhavan sutāḥ nahuṣah kṣatravṛddhaś ca
rajī rābhaś ca vīryavān anenā iti rājendra śṛṇu kṣatravṛddho 'nvayam kṣatravṛddha-sutasyāsan
suhotrasyaātmajās trayah kāśyah kuśo gr̥tsamada iti gr̥tsamadād abhūt śunakah śaunako yasya
bahvṛca-pravaro munih*

अर्थ: श्री शुकदेव गोस्वामी ने कहा: पुरुरवा-पुत्र आयु से जन्मे पुत्र थे नहुष, क्षत्रवृद्ध, वीर्यवान् रजि, राभ एवं अनेना। क्षत्रवृद्ध की शाखा में सुहोत्र के तीन पुत्र हुए — काश्य, कुश एवं गृत्समद — और गृत्समद के वंश से ही शुनक उत्पन्न हुए, जिनसे महर्षि शौनक हुए, ऋग्वेद के ज्ञाताओं में सर्वश्रेष्ठ। (नवम स्कन्ध, अध्याय 17, श्लोक 1-3)



पुरुरवा के पुत्र आयु से चन्द्रवंश अनेक धाराओं में विभक्त होता है — उन्हीं में क्षत्रवृद्ध का वंश, जिससे ऋषि शौनक उत्पन्न होते हैं, ऋग्वेद के पाठकों में श्रेष्ठ (श्लोक 1-3)।

धन्वन्तरि, दिव्य वैद्य

काश्य से काशि हुए, फिर राष्ट्र, दीर्घतमा के पिता; और दीर्घतमा से धन्वन्तरि उत्पन्न हुए, आयुर्वेद के प्रवर्तक — भगवान् वासुदेव के एक आंशिक अवतार, यज्ञभोक्ता, जिनका मात्र स्मरण समस्त दुःख को नष्ट कर देता है।

काश्यस्य काशिस्तत्पुत्रो राष्ट्रो दीर्घतमःपिता ।

धन्वन्तरिर्दीर्घतमस आयुर्वेदप्रवर्तकः ।

यज्ञभुग् वासुदेवांशः स्मृतमात्रार्तिनाशनः ॥ ४ ॥

kāśyasya kāśis tat-putro rāṣṭro dīrghatamaḥ-pitā dhanvantarir dīrghatamasa āyur-veda-pravartakaḥ yajña-bhug vāsudevāṁśaḥ smṛta-mātrārṭi-nāśanaḥ

अर्थ: काश्य के पुत्र काशि हुए, और काशि के पुत्र राष्ट्र से दीर्घतमा जन्मे; दीर्घतमा से धन्वन्तरि प्रकट हुए — आयुर्वेद-विद्या के प्रवर्तक, भगवान् वासुदेव के आंशिक अवतार, यज्ञ के भोक्ता, जिनका नाम-स्मरण मात्र ही समस्त पीड़ा को दूर कर देता है। (नवम स्कन्ध, अध्याय 17, श्लोक 4)

राजा अलर्क का दौघ शासन

धन्वन्तरि से केतुमान् हुए, फिर भीमरथ, दिवोदास, और द्युमान्, जो प्रतर्दन, शत्रुजित्, वत्स, ऋतध्वज, एवं कुवल्याश्च भी कहलाए; और उनसे अलर्क एवं अन्य हुए। शुकदेव ने एक आश्चर्य बताया: अलर्क के अतिरिक्त किसी राजा ने यौवन के पूर्ण ओज में छियासठ हज़ार वर्ष पृथ्वी का उपभोग नहीं किया।

षष्टिवर्षसहस्राणि षष्टिवर्षशतानि च ।

नालर्कादपरो राजन् बुभुजे मेदिनीं युवा ॥ ७ ॥

ṣaṣṭiṃ varṣa-sahasrāṇi ṣaṣṭiṃ varṣa-śatāni ca nālarkād aparo rājan bubhuje medinīm yuvā

अर्थ: छियासठ हज़ार वर्ष, हे राजन्, अलर्क के अतिरिक्त किसी अन्य राजा ने यौवन के पूर्ण ओज में पृथ्वी का उपभोग नहीं किया। (नवम स्कन्ध, अध्याय 17, श्लोक 7)



काशी वंश का एक आश्चर्य: कहा जाता है कि राजा अलर्क ने यौवन के अखण्ड ओज में छियासठ हज़ार वर्ष पृथ्वी का शासन किया — राजाओं के इतिहास में अद्वितीय एक शासन (श्लोक 6-7)।

अलर्क से सन्तति, सुनीथ, निकेतन, धर्मकेतु, सत्यकेतु, धृष्टकेतु, सुकुमार, वीतिहोत्र, भर्ग, और भार्गभूमि हुए — सभी क्षत्रवृद्ध के वंश में काशी के राजा।

राजा रजि और स्वर्ग का राज्य

तत्पश्चात् शुकदेव ने रजि की बात कही, आयु के एक अन्य पुत्र, जिनके पाँच सौ महाबली पुत्र थे। देवताओं की प्रार्थना पर, रजि ने असुरों का वध किया और स्वर्ग का राज्य इन्द्र को लौटा दिया। इन्द्र ने, कृतज्ञता में — और प्रह्लाद एवं अन्य शत्रुओं के भय से — राज्य उन्हें वापस दे दिया, उनके चरण पकड़े, और स्वयं को उनकी रक्षा में समर्पित कर दिया।

देवैरभ्यर्थितो दैत्यान् हत्वेन्द्रायाददाद् दिवम् ।
इन्द्रस्तस्मै पुनर्दत्त्वा गृहीत्वा चरणौ रजेः ।
आत्मानमर्पयामास प्रह्लादाद्यरिशङ्कितः ॥ १३ ॥

*devair abhyarthito daityān hatvendrāyādadād divam indras tasmai punar dattvā grhītvā
caraṇau rajeh ātmānam arpayām āsa prahrādādy-ari-śaṅkitaḥ*

अर्थ: देवताओं की विनती स्वीकार कर रजि ने असुरों का संहार किया और स्वर्ग-राज्य इन्द्र को सौंप दिया; तब इन्द्र, प्रह्लाद तथा अन्य शत्रुओं की आशंका से, राज्य पुनः उन्हें अर्पित कर, उनके चरण-कमल पकड़कर, स्वयं उनकी शरण में चले गए। (नवम स्कन्ध, अध्याय 17, श्लोक 13)



देवताओं की प्रार्थना पर असुरों का वध करके, शक्तिशाली राजा रजि स्वर्ग का राज्य इन्द्र को लौटा देते हैं — जो, कृतज्ञता एवं अपने शत्रुओं के भय से, रजि के चरण पकड़ते हैं और स्वयं को उनकी रक्षा में समर्पित कर देते हैं (श्लोक 12-13)।

रजि के पुत्रों का पतन

रजि की मृत्यु के पश्चात् इन्द्र ने रजि के पुत्रों से स्वर्ग-राज्य लौटाने की विनती की; उन्होंने इनकार कर दिया, क्योंकि वे इसे देवताओं से छीना हुआ नहीं वरन् अपने पिता की उचित विरासत मानते थे — तथापि उन्होंने यज्ञों में इन्द्र के अपने भाग लौटाने की सहमति दी। किन्तु जब देवगुरु बृहस्पति ने पवित्र अग्नि में आहुतियाँ डालीं, तब रजि के वे पुत्र धर्म से विचलित हो गए, और इन्द्र ने उन सबका सहज ही वध कर दिया; एक भी शेष न बचा।

गुरुणा हूयमानेऽग्नौ बलभित् तनयान् रजेः ।
अवधीद् भ्रंशितान् मार्गान्न कश्चिदवशेषितः ॥ १५ ॥

*guruṇā hūyamāne 'gnau balabhit tanayān rajeḥ avadhīd bhraṁśītān mārḡān na kaścid
avaśeṣītaḥ*

अर्थ: जब गुरु पवित्र अग्नि में आहुतियाँ डाल रहे थे, तब इन्द्र ने रजि के उन पुत्रों का वध किया, जो धर्म के मार्ग से भटक गए थे, और एक भी शेष न बचा। (नवम स्कन्ध, अध्याय 17, श्लोक 15)



जहाँ उनके पिता ने देवताओं की सेवा की, वहाँ रजि के पुत्रों ने स्वर्ग की लालसा की और यज्ञ-भाग हड़प लिए — और, धर्म के मार्ग से भटककर, नष्ट हो गए, एक भी शेष न बचा (श्लोक 14-15)।

क्षत्रवृद्ध के पौत्र कुश से प्रति हुए, फिर संजय, जय, कृत, हर्यबल, सहदेव, हीन, जयसेन, संकृति, और जय, क्षत्रिय-कर्तव्यों में समर्पित एक महान् योद्धा — सभी क्षत्रवृद्ध के वंश में राजा, इसके पूर्व कि शुकदेव नहुष-पुत्र ययाति के वंश की ओर मुड़ें।

इस अध्याय की प्रमुख शिक्षाएँ

1. एक मूल से अनेक धाराएँ फूटती हैं। आयु के पुत्र क्षत्रवृद्ध, काशी, रजि एवं अनेना के वंशों में विभक्त होते हैं — एक स्मरण कि भगवान् की योजना असंख्य परिवारों एवं पीढ़ियों के माध्यम से प्रकट होती है, प्रत्येक अपने धर्म सहित (श्लोक 1-3)।
2. भगवान् वैद्य रूप में भी अवतरित होते हैं। आयुर्वेद के प्रवर्तक धन्वन्तरि भगवान् वासुदेव के एक आंशिक अवतार हैं जिनका मात्र स्मरण दुःख को नष्ट कर देता है। भगवान् की करुणा हमारे शारीरिक कष्टों तक भी पहुँचती है, और उनका नाम ही औषधि है (श्लोक 4)।
3. सबसे दीर्घ शासन भी क्षणभंगुर है। अलर्क ने अखण्ड यौवन में छियासठ हज़ार वर्ष पृथ्वी का उपभोग किया — फिर भी वे भी चले गए, और उनका वंश आगे बहा। कोई पार्थिव वैभव, चाहे कितना भी विशाल, स्थायी नहीं (श्लोक 7)।
4. सेवा प्रभुत्व से बड़ी है। रजि स्वर्ग लौटाकर एवं कुछ न माँगकर स्वयं इन्द्र की कृतज्ञता जीत लेते हैं; उनकी महानता सेवा में है, ग्रसने में नहीं (श्लोक 12-13)।

5. विरासत मात्र से रक्षा नहीं होती। रजि के पुत्रों ने स्वर्ग लौटाने से इनकार किया, उसे अपने पिता की उचित विरासत मानते हुए — किन्तु बृहस्पति के अनुष्ठान से जब धर्म उनसे छूट गया, तब इन्द्र ने उन्हें सहज ही नष्ट कर दिया। जो सम्यक् रूप से विरासत में मिला था, वह उस आचरण को त्यागने वालों की रक्षा न कर सका जिसने उसे अर्जित किया था (श्लोक 14-15)।

6. धर्म ही सच्चा दुर्ग है। इन्द्र बलपूर्वक रजि के पाँच सौ महाबली पुत्रों पर विजय नहीं पा सके; केवल बृहस्पति के यज्ञ द्वारा हुए उनके नैतिक पतन ने ही उन्हें इन्द्र की शक्ति के समक्ष उजागर किया। भागवत की यह मौन शिक्षा है कि सदाचार से जो जीता एवं रक्षित है, वह किसी भी बल के समक्ष सुरक्षित रहता है, किन्तु जिस क्षण वह सदाचार त्याग दिया जाता है, कोई भी शक्ति, चाहे कितनी विशाल हो, आश्रय नहीं रह जाती (श्लोक 14-15)।

एक भक्तिपूर्ण चिन्तन

इस अध्याय के अनेक नामों के बीच, एक विशेष कोमलता से चमकता है: धन्वन्तरि, दिव्य वैद्य, काशी के वंश में भगवान् वासुदेव के आंशिक अवतार रूप में जन्मे। कि भगवान् केवल असुरों का वध एवं राजाओं का अभिषेक करने ही नहीं, बल्कि मानवता को चिकित्सा-कला सिखाने एवं वह बनने के लिए अवतरित हों जिनका मात्र स्मरण दुःख को दूर कर देता है, यह उनके हृदय के विषय में कुछ गहन बताता है। वे हमारे कष्टों के प्रति उदासीन कोई दूरस्थ सम्राट् नहीं; वे वह वैद्य हैं जो संसार के रोग-कक्ष में भी प्रवेश करते हैं। और अध्याय उनके साथ दो विपरीत व्यक्तियों को रखता है जिनकी शिक्षा कालातीत है: रजि, जिन्होंने देवताओं की सेवा की और स्वयं इन्द्र का समर्पण जीता, और रजि के पुत्र, जिन्होंने उसे ग्रसा जो उनके पिता ने मुक्त भाव से दिया था, और नष्ट हो गए। भागवत शान्तिपूर्वक हमसे पूछता है कि हम कौन बनेंगे — वे जो सेवा करते एवं छोड़ देते हैं, या वे जो पकड़ते एवं खो देते हैं। दुःखियों के लिए स्वयं को देने वाले वैद्य और जो उनका नहीं है उसे हड़पने वाले उत्तराधिकारियों के बीच, एक जीवन का सम्पूर्ण आध्यात्मिक चुनाव खिंचा हुआ है। और अध्याय की सबसे कोमल प्रतिज्ञा सबसे सरल है: कि भगवान्, धन्वन्तरि रूप में, अपने नाम के समान निकट हैं, और उनका स्मरण करना ही स्वस्थ होने का आरम्भ है।

एक दैनिक भक्ति-अभ्यास

आज, भगवान् की धन्वन्तरि रूप में शरण लें, वह दिव्य वैद्य जिनका स्मरण दुःख को दूर करता है। यदि आप या आपका कोई प्रिय शरीर या मन में अस्वस्थ है, तो स्वास्थ्य के लिए प्रार्थना अर्पित करें, रोग को कोमलता से भगवान् के हाथों में रखते हुए, और श्रद्धापूर्वक दोहराएँ, “ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।” फिर, राजा रजि की भावना में, ग्रसने के बजाय सेवा चुनें: आज दूसरे के भले के लिए एक कार्य करें और बदले में कुछ अपेक्षा न करें, पुरस्कार या मान्यता के किसी दावे को त्यागते हुए। ये दो गतियाँ — अपने दुःख को भगवान् पर सौंपना, और बिना ग्रसे सेवा करना — आपका अभ्यास बनें, यह स्मरण करते हुए कि जो भगवान् संसार के वैद्य रूप में अवतरित हुए, वे प्रत्येक हृदय के निकट आते हैं जो विश्वास से उनकी ओर मुड़ता है।

उपसंहार

नवम स्कन्ध का यह सत्रहवाँ अध्याय अनेक पीढ़ियों से होकर अनेक नाम लाता है, किन्तु एक शिक्षा शेष सबसे ऊपर रह जाती है: जो सेवा एवं सदाचार से जीता एवं रक्षित है वह सुरक्षित रहता है, जबकि जो मात्र दावे से माँगा जाता है, सदाचार खो जाने पर टिक नहीं सकता। भगवान् धन्वन्तरि, जिनका नाम ही रोग हरता है, दिखाते हैं कि भगवान् की करुणा संसार के रोग-कक्ष तक पहुँचती है; राजा रजि, जिन्होंने ग्रसने के

बजाय सेवा चुनी, दिखाते हैं कि सदाचार ही सच्चा आश्रय है। जीवन जो भी विरासत हमें दे, उसे हम स्वामित्व के अहंकार से नहीं, सेवा की विनम्रता से ग्रहण करें।

श्रीमद्भागवत का दिव्य ज्ञान हमारे हृदयों में शुद्ध भक्ति को जागृत करे।

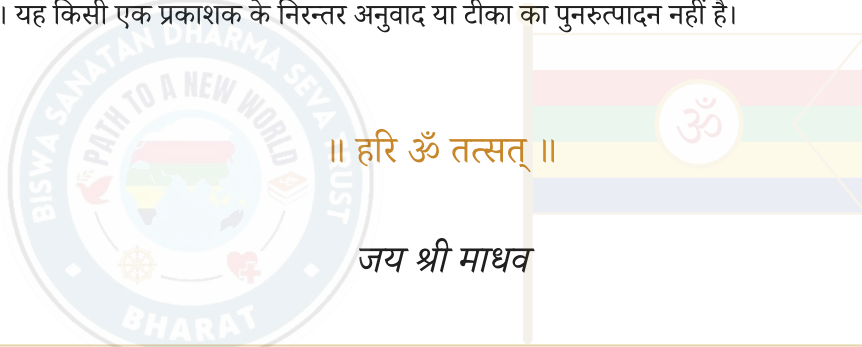
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

जय श्री माधव।

सन्दर्भ एवं आभार

- मुख्य संस्करण: गीता प्रेस, श्रीमद्भागवत महापुराण, नवम स्कन्ध, सप्तदश अध्याय।
- शृंखला: श्रीमद्भागवत विज्ञान • विश्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट।
- पण्डित डॉ. श्री काशीनाथ मिश्र के आध्यात्मिक मार्गदर्शन एवं संस्तुति के अनुसार प्रस्तुत।

यह लेखक के अपने शब्दों में एक मौलिक, श्रद्धापूर्ण पुनर्कथन है, जिसमें संक्षिप्त उद्धृत श्लोक देवनागरी एवं लिप्यन्तरण में दिए गए हैं और उनके अर्थ सारांश रूप में। यह किसी एक प्रकाशक के निरन्तर अनुवाद या टीका का पुनरुत्पादन नहीं है।



ऑनलाइन पढ़ें: kalkiabatara.org/hi/blog-srimad-bhagavatam-canto-9-chapter-17-dynasties-of-the-sons-of-pururava-hi.html

श्रीमद्भागवतम् विज्ञान • कल्कि अवतार इंटरनेशनल • बिस्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट